विषय - अर्थशास्त्र (प्रतिष्ठा)

PAPER - 1 स्नातक (I) (2019-22)

अर्थशास्त्र विभाग, M.V. College, BUXAR

Lesson - 01

अर्थशास्त्र का एक पृथक शाखा के रूप में जन्म 1776 ई० में प्रकाशित "An Enquiry into Nature and causes of wealth of Nations, जो कि एडम स्मिथ (Adam Smith) द्वारा लिखी गई थी, के द्वारा हुआ। इसीलिए एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनमदाता कहा जाता है।

अर्थशास्त्र के अर्थ (अथवा इसकी विषय-सामग्री) को समझने के लिए इसकी तीन प्रमुख परिभाषाओं को जानना आवश्यक है:—

1. धन संबंधी विचारधारा :— प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों एडम स्मिथ, जे.बी.से वाकर, सीनियर आदि ने धन, इसके अर्जन, वितरण एवं प्रयोग को अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में सम्मिलित किया है। इसप्रकार इन्होंने अर्थशास्त्र में धन के अध्ययन पर अधिक बल दिया है और इसे धन का विज्ञान कहा है।

2. कल्याणवादी विचारधारा :— अल्फ्रेड मार्शल एवं उनके समकालीन अर्थशास्त्रियों ने मनुष्य और उसके आर्थिक कल्याण पर बल दिया। वास्तव में धन केवल एक साधन मात्र है और मनुष्य का कल्याण साध्य है। इनके अनुसार, अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में उन आर्थिक क्रियाओं को शामिल किया जाना चाहिए जिनका संबंध भौतिक कल्याण से होता है।

3. दुर्लभता संबंधी विचारधारा :— इस विचारधारा का प्रतिपादन लॉर्ड रॉबिन्स ने किया। इनके अनुसार, मनुष्य की

मनुष्य की आवश्यकताएँ अथवा इच्छाएँ असीमित हैं परन्तु उनकी तुष्टि के लिये साधन सीमित हैं जिसके कारण मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं में चुनाव करना पड़ता है कि किस आवश्यकता को पूरा करे और किसे छोड़ दे। इसी चुनाव की समस्या का अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जाता है।

आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अर्थशास्त्र के विषयक्षेत्र को निम्न पाँच (5) भागों में बाँटा जाता है:-

1. <u>उत्पादन</u>:- मानव के आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति प्रदत्त निःशुल्क वस्तुओं के रूप, रंग, आकार, संरचना इत्यादि में परिवर्तन कर जब उनकी उपयोगिता बनायी जाती है तो यही उत्पादन है। इसके अंतर्गत आवश्यकताओं, उनके लक्षण, वर्गीकरण तथा संतुष्ट करने की विधि का अध्ययन किया जाता है।
2. <u>उपभोग</u>:- आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तु की उपयोगिताओं को कम करना ही उपभोग है।
3. <u>विनिमय</u>:- विनिमय का अर्थ वस्तुओं तथा सेवाओं की खरीद-बिक्री से है। कीमत निर्धारण इसकी प्रमुख समस्या है।
4. <u>वितरण</u>:- उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के सामूहिक सहयोग से जो उत्पादन होता है उसको विभिन्न साधनों में बाँटना ही वितरण का अध्ययन है जैसे - भूमि को लगान, श्रम को मजदूरी, पूँजी को ब्याज, साहसी को लाभ इत्यादि।
5. <u>राजस्व</u>:- इसके अंतर्गत लोक व्यय, लोक आय, लोक ऋण, वित्तीय प्रशासन आदि से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र:-

*. आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन के संदर्भ में नार्वे के अर्थशास्त्री रैगनर फ्रिश ने अर्थशास्त्र को दो प्रमुख शाखाओं में बाँटा है:-

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र
2. समष्टि अर्थशास्त्र

व्यष्टि (Micro) शब्द ग्रीक शब्द 'मइक्रोज (Micros) से लिया गया है जिसका अर्थ 'छोटा' होता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में हम अर्थव्यवस्था का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं इसमें केवल एक व्यक्तिगत इकाई की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करते है। ~~अर्थ~~ अर्थव्यवस्था की विभिन्न इकाइयाँ जैसेकि सहस्त्रों उपभोक्ता, सहस्त्रों उत्पादक अथवा फर्में, सहस्त्रों श्रमिक तथा अन्य साधनों के विक्रेता, किसप्रकार अपनी आर्थिक क्रियाएँ करते हैं तथा किसप्रकार संतुलन की स्थिती प्राप्त करते हैं।

इसके विपरीत, समष्टि (Macro) ग्रीक शब्द (Makros) से बना है जिसका अर्थ है 'विशाल'। समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है जैसेकि राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय विनियोग, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, सामान्य कीमत-स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर मुख्यतः इनकी परिभाषाओं, क्षेत्र, उद्देश्यों, महत्व इत्यादि के आधार पर किया जाता है।

अर्थशास्त्र की प्रकृति :- वास्तविक बनाम आदर्श विज्ञान

वास्तविक विज्ञान समस्याओं को "वे जैसी हैं" उसी रूप में अध्ययन करता है। इसप्रकार इसमें केवल कारण एवं परिणाम के सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है। जैसे कि उपयोगिता ह्रास नियम बढ़ते उपभोग और उसके कारण घटती उपयोगिता के पारस्परिक संबंध को बताता है। इसी आधार पर प्रो० जे०बी० से, सीनियर एवं प्रो० रॉबिन्स जैसे अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान की श्रेणी में रखा है।

इसके विपरीत, आदर्श विज्ञान का संबंध 'क्या होना चाहिए'; जैसे प्रश्न से है जिसमें आर्थिक पहलुओं की अच्छाई एवं बुराई के संबंध में विश्लेषण किया जाता है और तथ्य की वांछनीयता और अवांछनीयता पर अपना मत व्यक्त किया जाता है। जैसे कि भारतीय अर्थव्यवस्था में निरन्तर बढ़ रही कीमतों को नियंत्रित करने के लिए भारतसरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए जाने चाहिए, यह आदर्श विज्ञान का विषय है। इसी आधार पर मार्शल, पीगू, हट्रे, कीन्स आदि ने इसे आदर्श विज्ञान की श्रेणी में रखा है।

इसप्रकार स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान भी है और आदर्श विज्ञान भी।

CHAPTER- 02

उपभोक्ता संतुलन

1. उपयोगिता का अभिप्राय :-

वस्तु विशेष में किसी उपभोक्ता की आवश्यकता विशेष को संतुष्ट की जो क्षमता अथवा शक्ति निहित होती है उसे ही उपयोगिता कहा जाता है। प्रत्येक वस्तु अथवा सेवा में कोई न कोई विशेषता अवश्य निहित होती है जिसके कारण उपभोक्ता उसकी माँग करता है चाहे वह लाभदायक हो या हानिकारक। जैसे रोटी में भूख शान्त करने की शक्ति होती है और यही शक्ति उसकी उपयोगिता है।

2. उपयोगिता की धारणाएँ :-

उपयोगिता

↓ ↓

सीमान्त उपयोगिता — कुल उपयोगिता

सीमान्त उपयोगिता - किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से जो अतिरिक्त उपयोगिता मिलती है, उसे सीमान्त उपयोगिता कहते हैं। $MU_{nth} = TU_n - TU_{n-1}$

कुल उपयोगिता - उपभोग की सभी इकाइयों के उपभोग से उपभोक्ता को जो उपयोगिता प्राप्त होती है उसे कुल उपयोगिता कहते हैं $TU = \Sigma MU$

3. सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता में संबंध :-

1. जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक रहती है तब तक कुल उपयोगिता बढ़ती है।
2. जब सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाती है तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

3. जब सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक होती है तब कुल उपयोगिता घटने लगती है।

सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता का संबंध निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट है:-

वस्तु X की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता (MU)	कुल उपयोगिता (TU)
1	40	40
2	30	40+30 = 70
3	20	70+20 = 90
4	10	90+10 = 100
5	0	100+0 = 100
6	-10	100-10 = 90
7	-20	90-20 = 70

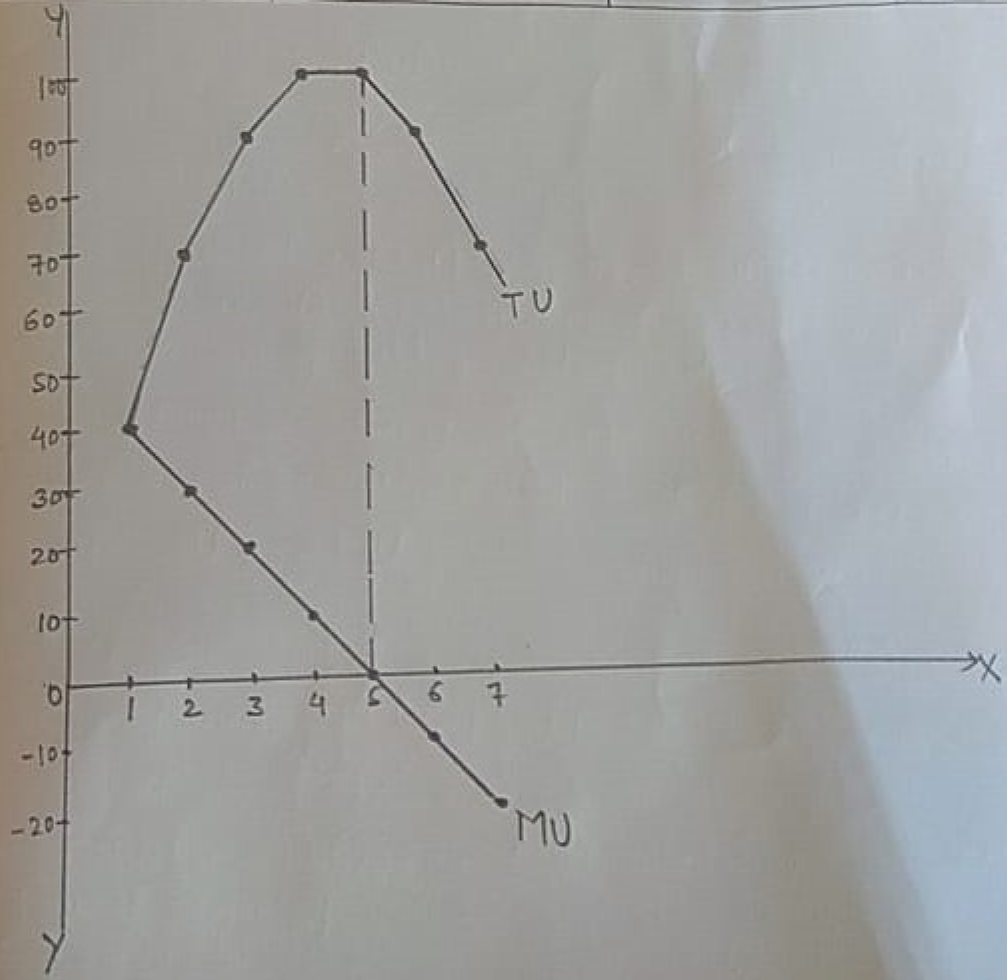

उपयोगिता का मापन :-

उपयोगिता के माप के सम्बन्ध में प्रो० मार्शल ने गणनावाचक दृष्टिकोण (Cardinal viewpoint) प्रस्तुत किया जबकि हिक्स-एलन ने क्रमवाचक दृष्टिकोण ~~प्रस्तुत~~ (Ordinal viewpoint) प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने दृष्टिकोण के माध्यम से उपभोक्ता संतुलन को स्पष्ट किया है।

1. **गणनावाचक दृष्टिकोण :-** इसके अनुसार, कोई व्यक्ति किसी वस्तु के उपभोग से प्राप्त संतुष्टि को गणनावाचक अंकों जैसे- 1, 2, 3.... आदि में व्यक्त कर सकता है। इसप्रकार एक व्यक्ति यह कह सकता है कि उसको अ वस्तु की एक इकाई का उपभोग करने से दस इकाइयों के समान संतुष्टि मिलती है तथा ब वस्तु की इकाई के उपभोग से बीस इकाइयों के समान। मार्शल के अनुसार सीमान्त उपयोगिता को वास्तविक रूप में मुद्रा में मापा जा सकता है। किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने के स्थान पर व्यक्ति किसी वस्तु की एक इकाई को प्राप्त करने के लिए जो मुद्रा देने को तैयार रहता है उसी को उस वस्तु से प्राप्त उपयोगिता माना जाता है।

ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम :-

इस नियम के अनुसार, जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु अथवा सेवा की मानक इकाइयों का लगातार अधिक उपभोग करता है तो प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। इस नियम का सर्वप्रथम उल्लेख आस्ट्रियन अर्थशास्त्री एच० एच० गोसेन ने किया था। अतः इसे 'गोसेन का प्रथम नियम' भी कहते हैं।

केले की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता
1	20
2	16
3	10
4	4
5	0 → पूर्ण तृप्ति बिंदु
6	-6

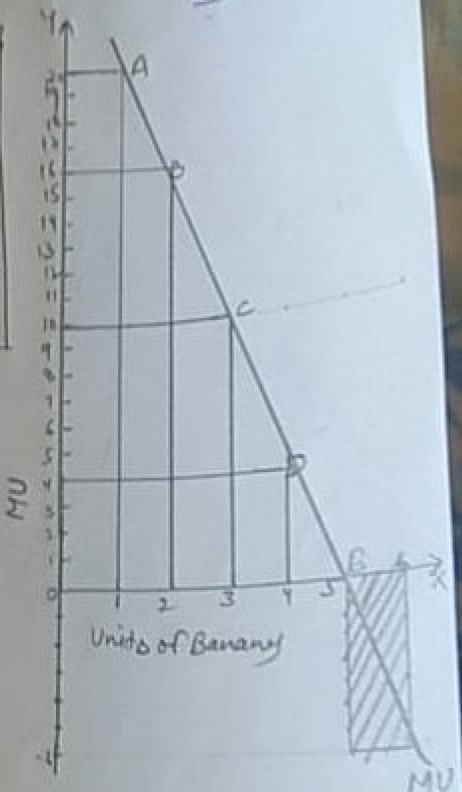

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम अथवा सीमान्त उपयोगिता के प्रयोग द्वारा उपभोक्ता संतुलन:-
इस नियम को गोसेन का दूसरा नियम कहते हैं। यह नियम स्पष्ट करता है कि एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इसप्रकार व्यय करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च की गई रुपये की अन्तिम इकाई से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिताएं आपस में बराबर हैं। इसी स्थिति में उपभोक्ता संतुलन में होता है।

उपभोक्ता संतुलन $= MU_x = MU_y$

उपभोग वस्तुओं की कीमतें एक समान न होने की दशा में उपभोक्ता का संतुलन उस बिंदु पर प्राप्त होता है जहाँ -

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = \ldots\ldots MU_m$$

अर्थात $\dfrac{X \text{ वस्तु की सीमान्त उपयोगिता}}{X \text{ वस्तु की प्रति इकाई कीमत}} = \dfrac{Y \text{ वस्तु की सीमांत उपयोगिता}}{Y \text{ वस्तु की प्रति इकाई कीमत}} =$
$=$ मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता

क्रमवाचक दृष्टिकोण:— मार्शल के 'उपयोगिता विश्लेषण' की वैकल्पिक विचारधारा के रूप में हिक्स एवं ऐलन ने 'उदासीनता वक्र विश्लेषण' की विचारधारा प्रस्तुत की।, जो क्रमवाचक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है यह बताता है कि उपयोगिता को इकाईयों के संदर्भ में नहीं मापा जा सकता। इसे केवल वरीयता क्रम (I, II, III ......) देकर ही व्यक्त किया जासकता है।

उदासीनता वक्र:— उदासीनता वक्र दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों से संबंधित उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या करता है। इसमें विभिन्न संयोग इसप्रकार व्यवस्थित रहते है जिनसे उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि प्राप्त होती है। जिसकारण उपभोक्ता उनसंयोगों के प्रति उदासीन रहता है और किसी एक को अन्य की तुलना में वरीयता नहीं देता। इसे निम्न अनुसूची एवं रेखाचित्र द्वारा समझा जासकता है:-

संयोग	वस्तु x	वस्तु y
A	1	20
B	2	15
C	3	11
D	4	8
E	5	6
F	6	5

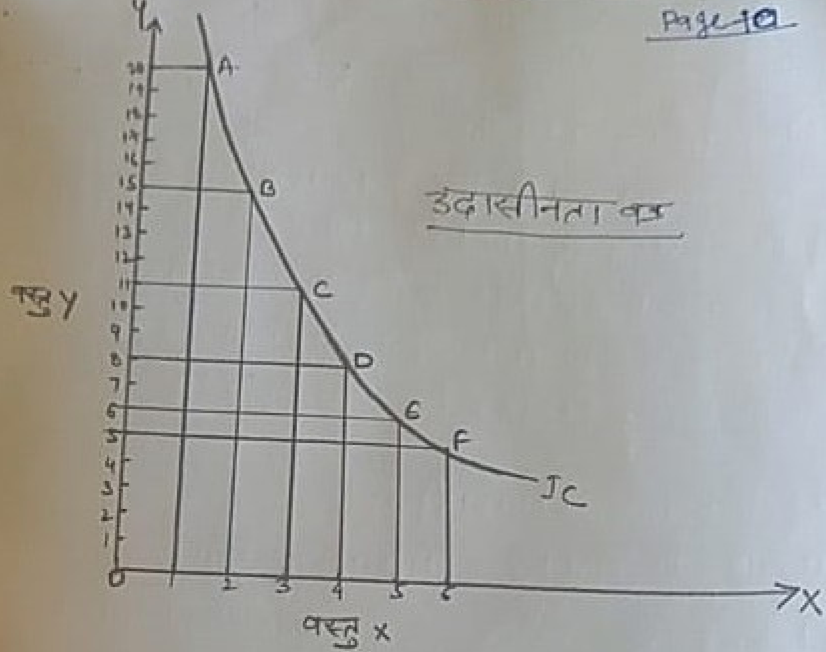

सीमान्त प्रतिस्थापन दर :- उदासीनता वक्र के अंतर्गत उपभोक्ता विभिन्न संयोगों में एक समान संतुष्टि स्तर बनाये रखने के लिए जब एक वस्तु की इकाइयों को उत्तरोत्तर बढ़ाता जाता है तो उसे दूसरी वस्तु की इकाइयों का परित्याग करना पड़ता है। किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता दूसरी वस्तु की जितनी इकाइयों को छोड़ता है, उसे सीमान्त प्रतिस्थापन दर कहा जाता है। यह सदैव घटनात्मक होती है।

$$MRS_{xy} = \frac{-\Delta y}{\Delta x}$$

बजट रेखा या कीमत रेखा :- बजट रेखा या कीमत रेखा वह रेखा है जो दो वस्तुओं के ऐसे सभी संयोगों को प्रदर्शित करती है जिन्हें उपभोक्ता दी गई आय तथा वस्तु कीमतों के साथ खरीद सकता है।

$$P_x \cdot x + P_y \cdot y = M$$

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता संतुलन :-

एक उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में तब होता है जब अपनी सीमित आय की सहायता से वस्तुओं को उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इसप्रकार उपभोक्ता के संतुलन की दो शर्तें हैं :-

(1) उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करे अर्थात

$$MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y}$$

(2) संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होनी चाहिए अर्थात संतुलन बिंदु पर MRS_{xy} घटती हुई होनी चाहिए।

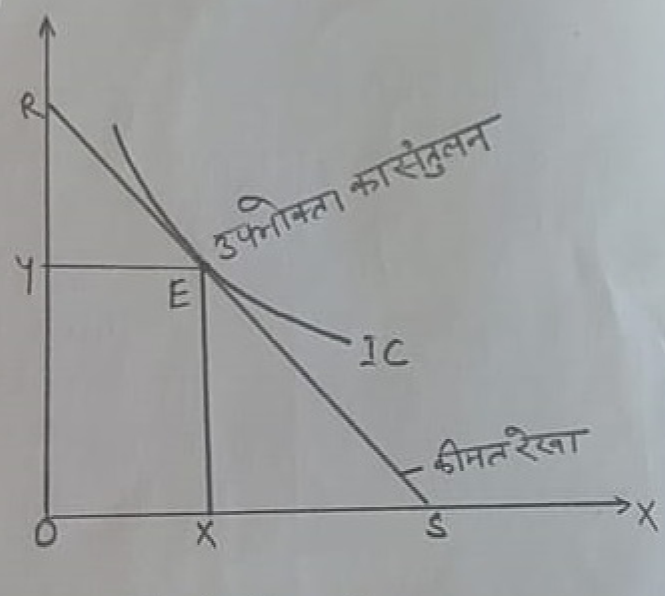

BOOKS Recommended for Paper - I

(1) व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण — डा० अनुपम अग्रवाल
(2) अर्थशास्त्र — डा० वी० सी० सिन्हा
(3) आर्थिक विश्लेषण के सिद्धान्त — डा० टी० टी० सेठी